

छोटी उम्र में बड़ा अनुभव

प्रेषिका : रोहिणी कपूर

मैं पठानकोट की रहने वाली हूँ और सांवली लेकिन भरे फूले शरीर की मालकिन हूँ। मैं एक अच्छे खाते पीते परिवार की लड़की हूँ। मेरे पापा बहुत बड़े सरकारी अफसर हैं। मेरी माँ एक पढ़ी-लिखी और फ़ेशनेबल स्त्री हैं, वहीं मेरे पापा बहुत ही शरीफ़ और इमानदार अफ़सर हैं। मेरा भाई विदेश में रहता है।

मेरे भाई का एक दोस्त था, जिसका एक छोटा भाई था जिसका नाम राहुल था। राहुल अपने भाई के साथ कई बार हमारे घर आया करता था। मुझे राहुल शुरु से ही बहुत पसन्द था। धीरे धीरे वो भी मुझे पसन्द करने लगा था। अब वो अपने भाई के बिना भी हमारे घर आने लगा था। हम दोनों अक्सर मोबाइल पे बातें किया करते थे, अब हमारी बातें प्रेमियों की तरह होने लगी थी। वो हमारे घर किसी ना किसी बहाने से आ ही जाता था। घर वाले उसके इस तरह घर आने पे शक भी नहीं करते थे।

इस तरह एक साल बीत गया और अब तक मुझे भी दोस्ती और प्यार में फ़र्क पता चल गया था, मेरे मन में भी राहुल को लेकर कई तरह के खयाल आने शुरु हो गये थे। अब हम मोबाइल पर एक दूसरे का चुम्बन आदि करने लगे थे, इसी तरह राहुल ने मिलने पर भी चुम्बन मांगना शुरु कर दिया लेकिन मैं उसे मना कर देती थी।

लेकिन मैं उसको इस तरह ज्यादा दिन मना नहीं कर पाई और एक दिन वो मुझे पढ़ाने के बहाने मेरे घर आया। मेरी माँ अपने कमरे में टी वी देख रही थी, उस वक्त उसने मुझे अचानक कन्धों से पकड़ लिया और मुझे चुम्मा देने के लिये कहने लगा। इस बार मैं उसको मना नहीं कर पाई और उसने माँ के आ जाने के डर से मुझे धीरे से एक बार चूम कर छोड़ दिया। कुछ ही देर बाद वो वापिस अपने घर चला गया।

उस रात मैं बेसब्री से उसके फोन का इन्तजार कर रही थी कि ग्यारह बजे के करीब उसका फोन आया। मैं बहुत खुश थी।

उसने मुझे पूछा- तुम्हें चुम्बन में मजा आया?

तो मैंने अपने दिल का हाल उसे बता दिया।

उस दिन उसने मेरे साथ फोन सेक्स भी किया। मेरी हालत बहुत खराब हो चुकी थी, मेरा दिल चाह रहा था कि राहुल अभी आ जाये और मुझे अपनी बाहों में भर के वो सब कुछ कर डाले जो फोन पे कह रहा था।

अब हम मिलते तो चुम्बन तो आम हो गया था अब राहुल बेझिझक मेरे शरीर पर जहाँ चाहता हाथ फेरता था। हमने घर से बाहर रेस्टोरेन्ट में भी मिलना शुरु कर दिया था। वहाँ राहुल बेझिझक मेज़ के नीचे मेरी स्कर्ट के अन्दर मेरी जांघों पर हाथ फेरता था कभी मौका पा के शर्ट के उपर से ही मेरे स्तनों को सहला देता था। ये सब मुझे बहुत अच्छा लगता था। घर पे मैं अपने भैया का कम्प्यूटर ही प्रयोग करती थी जिस में मैं कई बार ब्लू-फ़िल्म देखा करती थी। अब मुझे इस सबकी अच्छी तरह समझ आ चुकी थी। मैं मन ही मन ना जाने कितनी बार राहुल के साथ सम्भोग कर चुकी थी। इस बीच मेरे पापा का तबादला कहीं और हो गया लेकिन मेरी पढ़ाई की वजह से मुझे और मेरी माँ को पठानकोट में ही रुकना पड़ा।

इसी बीच एक बार हमारा एसी खराब हो गया और पापा ने जहाँ से एसी लिया था वहाँ फोन से शिकायत लिखवा दी। उस दिन रविवार था और वो शोरूम बन्द था इसलिए शोरूम के मालिक जो हमारे घर के पास ही रहते थे का बेटा खुद एसी चेक करने हमारे घर आ गया। उनके परिवार से हमारे बहुत अच्छे पारिवारिक सम्बंध थे, अक्सर हमारे घर आते जाते रहते थे। उनका नाम रोहण था, मैं उनको रोहण भैया कहती थी। वो करीब 27-28 साल के होंगे। उन्होंने थोड़ी ही देर में एसी ठीक कर दिया। माँ ने उन्हें कोल्ड ड्रिंक वगैरह पिलाई और कुछ देर बातें करने के बाद वो चले गये। लेकिन इसके बाद उनका हमारे घर आना जाना बढ़ गया। अक्सर माँ उनसे फोन पे बातें करती रहती थी जो मुझे अच्छा नहीं लगता था। हम शनिवार और रविवार को पापा के पास चले जाया करते थे या पापा यहाँ आ जाया करते थे और घर की चाबियाँ रोहण भैया के पास ही रहती थी, दूसरी चाबी हमारे पास होती थी।

एक बार माँ किट्टी-पार्टी पे जा रही थी। जब माँ जा रही थी तो रोहण भैया भी बाहर खड़े थे, माँ ने उन्हें मेरा

ध्यान रखने को बोला और चली गई। माँ के घर से बाहर जाते ही मैंने राहुल को फोन कर दिया तो राहुल ने घर पे मिलने की जिद करनी शुरू कर दी, मन तो मेरा भी बहुत कर रहा था राहुल को अकेले में मिलने का, मैंने माँ को फोन करके अपनी सहेली के घर जाने का पूछा, माँ ने कह दिया कि मैं 3-4 घंटे में वापिस आ जाऊँगी उससे पहले वापिस आ जाना। मैंने राहुल को फोन किया और घर बुला लिया। मैं भी बहुत खुश थी कि आज राहुल के साथ जो अपने सपनों में होते देखा था आज हकीकत में उसका मजा लूँगी।

इसी बीच राहुल आ गया। राहुल को अन्दर बुला कर मैंने जल्दी से बाहर वाले दरवाजे को लॉक कर लिया। मैंने उस समय आसमानी रंग की स्कर्ट और सफ़ेद रंग का टोप पहना हुआ था। राहुल ने मुझे वहीं से अपनी बाहों में उठा लिया और बेडरूम में ले गया।

वो कुछ ज्यादा ही जल्दी में लग रहा था। मैंने उसे कहा- माँ ने 3-4 घंटे बाद वापिस आना है, पहले कुछ खा पी तो लो !

लेकिन वो कहने लगा- एक शिफ्ट हो जाये उसके बाद देखेंगे खाना पीना।

कुछ ही पलों में मैं सिर्फ़ ब्रा और पेंटी में थी। उस समय मैं 30 नम्बर की ब्रा पहनती थी जोकि उम्र के हिसाब से कहीं बड़ा था। अब मैं भी आपा खो चुकी थी मैंने जल्दी से राहुल की टी-शर्ट उतार दी और उसकी पैंट की जिप खोलने लगी, उसने मेरी ब्रा की हुक खोल दी और मेरे मम्मों को बाहर निकाल के चूसना शुरू कर दिया। मैंने भी राहुल का लण्ड बाहर निकाल के उसको हाथों से सहलना शुरू कर दिया।

अब राहुल के हाथ भी चल रहे थे, वो मुँह से मेरे मम्मों को चूस रहा था और हाथों से मेरी पेन्टी उतार रहा था। मैं राहुल के सामने बिल्कुल नंगी थी, राहुल मेरे मम्मे चूसता हुआ अपनी एक उँगली को धीरे धीरे मेरी फुद्दी (चूत) में घुसाने की कोशिश कर रहा था, उसकी इस कोशिश की वजह से मैं आपे से बाहर हो गई और राहुल को अपना लण्ड मेरी फुद्दी (चूत) में डालने को कहने लगी।

राहुल ने भी मौके की नजाकत को समझा और मुझे बेड पे पीठ के बल लेट जाने को बोला, मैंने वैसा ही किया।

अब राहुल मेरी दोनों टांगों के बीच में था, उसने कहा- अपनी दोनों टांगों को फ़ैलाओ !

मैंने वैसा ही किया, राहुल ने मेरी टांगों को उठा के अपने कन्धों पर रख लिया और धीरे से अपना लण्ड मेरी फुद्दी पे रख दिया, यह मेरी और राहुल दोनों की ही पहली चुदाई थी। राहुल ने अपना लण्ड मेरी फुद्दी पे रख के दबाव बढ़ाना शुरू किया। लण्ड थोड़ा सा अन्दर गया और फ़िसल कर बाहर आ गया, इस तरह एक दो बार हुआ तो राहुल खुद पे कन्ट्रोल नहीं कर पाया और इतने में ही स्वलित हो गया।

इतने में दरवाजे पर आहट हुई और कोई अन्दर आया। हम दोनों के होश उड़ गये, वो और कोई नहीं रोहण भैया थे। राहुल उठ कर भागने लगा तो भैया ने उसको पकड़ लिया। हमने भैया से बहुत मिन्नतें की लेकिन भैया ने राहुल को उसी बेडरूम में बन्द कर दिया और मुझे खींच कर दूसरे कमरे में ले गये।

मैंने सोचा- कैसी मुसीबत में फ़न्स गये ? किया भी कुछ नहीं और पकड़े भी गये !

लेकिन भैया का मूड कुछ और ही था। या फिर मेरा नंगा जिस्म देख के उनके होश उड़ गये थे।

उन्होंने मुझे सीधा ही बोल दिया- अगर तुम बदनामी और अपनी माँ से बचना चाहती हो तो तुम्हें मुझसे चुदना होगा।

मेरे पास और कोई चारा भी नहीं था और वैसे भी मैं अभी चुदी कहाँ थी लण्ड का स्वाद चखने से पहले ही पकड़ी गई थी। रोहण की बात मैं मान गई। लेकिन मैंने रोहण भैया को पहले राहुल को छोड़ने के लिये बोला। भैया मान गये लेकिन उन्होंने पहले मुझे इसी हालत में फोटो खिंचवाने के लिये बोला ताकि मैं अपनी बात से मुकर ना जाऊँ ! लेकिन मैं तो खुद ही तैयार थी इसलिये मैं झट से मान गई।

भैया ने जल्दी से अपना मोबाईल निकाला और मेरे नग्न शरीर की 6-7 तस्वीरें खींची और मुझे कपड़े पहनने को बोल दिया और राहुल को डरा धमका कर घर से भगा दिया।

राहुल के जाने के बाद मैं झट से किचन में गई और रोहण भैया के लिये फ़्रिज से कोल्ड ड्रिन्क ले आई। भैया ने एक दो घून्ट ही कोल्ड ड्रिन्क पी और मुझे बेडरूम में आने का इशारा करके मेरे आगे आगे चल पड़े। बेडरूम में पहुँचते ही उन्होंने मुझे अपनी बाहों में उठा कर बेड पे लिटा दिया।

भैया ने जल्दी से बिना वक्त गंवाए मेरे कपड़े उतारने शुरू कर दिये, देखते ही देखते एक मिनट से भी पहले मैं भैया के सामने नग्न लेटी हुई थी।

अब भैया मेरे सामने खुद के भी कपड़े निकालने लगे, भैया सिर्फ अन्डरवियर में मेरे सामने खड़े थे, अन्डरवियर में से उनका लण्ड थोड़ा उभरा हुआ सा नजर आ रहा था। लेकिन भैया ने अपना अन्डरवियर भी निकाल दिया और हम दोनों अब निर्वस्त्र थे। भैया का लण्ड देख के मेरे तो होश ही उड़ गये, रोहण भैया का लण्ड मेरे अनुमान से बहुत ज्यादा बड़ा था।

भैया ने कहा- तुम सिर्फ मेरी वजह से चुदना चाहती हो या मजा लेना चाहती हो ?

मैंने बेझिझक बोल दिया- मैं मजा लेना चाहती हूँ।

तो भैया की आँखों में अजीब सी खुशी नजर आई मुझे। मैं बेड पर बैठी थी और रोहण भैया मेरे सामने खड़े थे। रोहण ने कहा- मेरा लण्ड अपने मुँह में ले लो और इसको लॉलीपॉप की तरह चूसो !

मैं वैसा ही करने लगी। तीन चार मिनट तक यूँ ही मैं उनका लण्ड चूसती रही, रोहण भैया का लगभग नौ इंच का लण्ड अपने पूरे आकार में तन गया था, जिससे मुझे लण्ड को पूरा मुँह में लेने में परेशानी हो रही थी। तभी भैया ने अपना लण्ड मेरे मुँह में से बाहर निकाल लिया। अब भैया ने मेरे मम्मों को अपने हाथों में संभाल लिया, वे उन्हें बड़े प्यार से सहलाने लगे वह कभी मेरे स्तनों को तो कभी गहरे गुलाबी रंग के चुचूकों को चुटकियों से मसल रहे थे। मुझे इस सब में बहुत मजा आ रहा था। भैया ने मम्मे चूसते चूसते अपनी एक उँगली को धीरे धीरे मेरी फुद्दी में घुसा दिया। मैं अब आपा खो चुकी थी, रोहण भैया अब अपनी जीभ से मेरी फुद्दी चाटने लगे थे, मेरे शरीर में बिजलियाँ दौड़ने लगी थी, मैं कामुक स्वर में बोली- रोहण ! अब देर मत करो प्लीज़...

इतना सुनते ही भैया ने मेरी फुद्दी में ढेर सारा थूक लगाया और अपने मोटे लण्ड के मुँह को मेरी फुद्दी के मुँह पर रख कर धक्का मारा, मुझे बहुत दर्द महसूस हुआ लेकिन कुंवारी फुद्दी होने के कारण रोहण का लण्ड भी राहुल की तरह फिसल जाने के कारण ज्यादा दर्द नहीं सहना पड़ा। पर रोहण भैया तो पक्के शिकारी थे, उन्होंने मेरे होंठों पर अपने होंठ रख दिए और अपने हाथों से मेरी जाँघों को थोड़ा और फ़ैला दिया और लिंग-मुंड को फिर से फंसा कर दोबारा कोशिश करने लगे।

भैया ने इस बार हल्का सा धक्का दिया, लिंग-मुंड मेरी फुद्दी को लगभग फाड़ते हुए अन्दर घुस गया। दर्द के मारे मेरी चीख निकल गई आ ई ई ई ऊई मां मर गई मैं तो प्लीज़.... निकालो इसे ...

मैं इतना ही कह पाई थी कि रोहण ने थोड़ा पीछे हट कर एक धक्का और मारा !

मैं बुरी तरह चीखी- उफ आई... मां प्लीज़ ...भैया प्लीज़ ओह....

और दर्द के मारे मैं आगे कुछ नहीं कह पाई और अपने सिर को बेड से सटा लिया, मेरी आँखों में पानी आ गया था।

भैया ने कहा- बस एक दो इंच बचा है.....अगर कहो तो डाल दूँ ?

मैंने कहा- ...अब इतना दर्द नहीं है..... भैया ...अगर एक दो इंच ही रह गया है तो डाल दो मैं झेल लूंगी ।

लेकिन भैया झूठ बोल रहे थे, लण्ड अभी आधा बाहर ही था। भैया ने लण्ड को दो तीन इंच पीछे खींच कर एक जोर का धक्का मारा, मेरा मुँह बेड पर घिसटता हुआ सा आगे सरक गया, मुझे लगा जैसे किसी ने कोई तेज़ तलवार मेरी फुद्दी में घुसा दी हो, मेरे हलक से मर्मांतक चीख निकली, मेरा हाथ मेरी फुद्दी पर पहुँच गया, हाथ चिपचिपे से द्रव्य से सन गया। मैंने हाथ को आँखों के सामने ला कर देखा तो और डर गई, अंगुलियाँ खून से लाल थी, उफ.....मेरी फुद्दी तो जखमी हो गई.....अब क्या होगा.....उफ निकालिए इसे..... मैं रोती हुई कह रही थी, भैया मैं मर जाऊंगी।

भैया ने मेरे मम्मे मसलते हुए कहा- यह तो थोड़ी सी ब्लीडिंग योनि-पट फटने से होती है अब तुम्हें सिर्फ मजा ही मजा आएगा।

उनकी बात सच ही थी- धीरे धीरे मेरा दर्द आनंद में बदलने लगा था। भैया अब थोड़ा जल्दी जल्दी अपने लंबे लण्ड को अन्दर-बाहर करने लगे। मैं बुरी तरह कांपने लगी थी, मेरे मुँह से कामुक आवाजें फूट रही थी। अब मुझे बहुत मज़ा आने लगा था। मैंने कहा- भैया ! ज़रा जोर-जोर से कीजिये ! उफ....उफ... ! मैं टूटे शब्दों में बोली।

भैया ने रफ़्तार बढ़ा दी, मेरी सिसकारियाँ और भी कामुक हो गई, वो जैसे निर्दयी हो गए थे, फ़च फ़च की आवाज़ सारे कमरे में गूँज रही थी, उत्तेजना में मैंने भैया की पीठ को नोचना शुरू कर दिया था , उसने मेरे स्तनों को और मेरे लंबों को चूसना शुरू कर दिया। मैं हुच.. हुच. की आवाजों के साथ बिस्तर पर रगड़ खा रही थी। रोहण भैया अपने पूरे जोश में थे, वह मेरे मम्मों को सहलाते तो कभी मेरे चुचूक को मसलते हुए आगे पीछे हो रहे थे।

अब उनकी गति में और तेजी आ गई, मैं दांतों तले होंठों को दबाये उनके लिंग द्वारा प्राप्त आनंद के सागर में हिलोरें

ले रही थी। अब भैया चित्त लेट गए और मुझे अपने लण्ड पर बिठा लिया मैं स्वयं ऊपर नीचे होने लगी, एसी चालू होने के बावजूद हम दोनों को पसीना आ गया था। अचानक भैया का तेवर बदला और उन्होंने बैठ कर मुझे फिर पीठ के बल लिटा दिया और मेरी फुट्टी में अपना लण्ड डाल कर जोर जोर से धक्के मारने लगे। मैं अपने चरम पर आ चुकी थी, अचानक उन्होंने अपना लिंग मेरी योनि से निकाल लिया और मेरे मुँह में डालकर जोर जोर से धक्के मारे और फिर मेरे सर को थाम कर ढेर से होते चले गए, वह मेरे मुख में ही स्खलित हो गए।

मैंने उनके लिंग को छोड़ा नहीं बल्कि उसे चूस चूस कर दोबारा उत्तेजित करने लगी। रोहण भैया ने मेरे मम्मों से खेलना शुरू कर दिया और बोले- क्यों ? कैसा रहा.....?

बहुत मजा आया भैया ! लेकिन मेरी फुट्टी तो जैसे सुन्न हो गई है मैंने उनकी पीठ को सहलाते हुए कहा।

यह सुन्नपन तो खत्म हो जायेगा थोड़ी देर में, पहली बार में तो थोड़ा कष्ट उठाना ही पड़ता है, अब तुम अगली बार देखना इतनी परेशानी नहीं होगी बल्कि सिर्फ मजा आएगा, भैया ने मेरे स्तन को चूसते हुए कहा।

उफ भैया.....इन्हें आप चूसते हैं तो कैसी घंटियाँ सी बजती है मेरे शरीर में ! प्लीज भैया चूसिये इन्हें ! मैं कामुक तरंग में खेलती हुई बोली।

अच्छा लो ! कह कर रोहण भैया मेरे गहरे गुलाबी रंग के निप्पलों को बारी बारी चूसने लगे, मैं आनंदित होने लगी।

मैंने भैया से पूछा- आपने पहले किसी को चोदा है ?

हाँ चोदा है । लेकिन इससे पहले मैंने 20 साल से कम उम्र की किसी लड़की को कभी नहीं चोदा।

उस दिन माँ के आने से पहले भैया ने मुझे एक बार और चोदा। इस चुदाई के एक सप्ताह तक मुझे पेशाब करते वक्त पेशाब वाली जगह पे बहुत जलन होती रही। अब यह सिलसिला लगातार चल रहा है।

शेष अगले भाग में !

rohini.kapur@yahoo.com

०२ मार्च, २०१०

हम सुधरेंगे : जग सुधरेगा !

अन्तर्वासना

अन्तर्वासना

अन्तर्वासना

अन्तर्वासना

अन्तर्वासना

अन्तर्वासना

अन्तर्वासना

अन्तर्वासना

अन्तर्वासना

अन्तर्वासना

अन्तर्वासना

अन्तर्वासना

अन्तर्वासना

अन्तर्वासना

अन्तर्वासना

अन्तर्वासना

अन्तर्वासना

अन्तर्वासना

अन्तर्वासना

अन्तर्वासना

अन्तर्वासना

अन्तर्वासना

अन्तर्वासना

अन्तर्वासना

अन्तर्वासना